ISSN 976-8645

# वेदों में पर्यावरणीय चिन्तन

मनीषा कश्यप

**कूट-शब्द** -

वेद , पर्यावरण, प्राकृतिक पर्यावरण, सांस्कृतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण

**शोध-सार –**

वेद सर्वज्ञानमय हैं ।यह वह पवित्रतम ज्ञानराशि है जिससे इष्ट-प्राप्ति और अनिष्ट-निवारण होता है- **इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थः वेदयति स वेदः** । वेदों में जल, वायु, भूमि, मेघ, वन-वनस्पतियों आदि की देवी-देवताओं के रूप में उपासना तथा सदैव इनकी सेवा करने की कामना की गई है । प्राकृतिक पर्यावरण के साथ ही वेदों में सांस्कृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण के शुद्धिकरण से सम्बन्धित विचार भी प्राप्त होते हैं । प्रस्तुत शोध-पत्र में वेदों में निहित पर्यावरणीय चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है तथा वर्तमान समाज में इसका महत्त्व प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है ।

---

वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान का अक्षय कोष है ।भारतीय मनीषियों ने आदिकाल से ही पर्यावरण को विशेष महत्त्व दिया है ।पर्यावरण शब्द **परि** तथा **आङ्** उपसर्ग पूर्वक **वृङ्** धातु से निष्पन्न होता है । **वृङ्** धातु का अर्थ है- **आवृत् या आच्छादित करना** । अतः पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ है- **परित आवृणोति आच्छादयति यत् तत् पर्यावरणम्- अर्थात् जीव को चारों ओर से घेरने वाला आवरण** । वस्तुतः पर्यावरण बडा व्यापक शब्द है । पर्यावरण का तात्पर्य केवल प्राकृतिक घटकों से ही नहीं लगाया जाता अपितु पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के आवरण एवं परिवेश से है जिससे हम घिरे रहते हैं और जो प्रत्यक्ष एवम् अप्रत्यक्ष रूप से हमें प्रभावित करता है ।

वैदिक ऋषि प्रकृति को सचेतन मानते थे ।वेदों में परम पुरुष परमेश्वर को सृष्टि उत्पादक देवता माना है[66] तथा सूर्य, पृथिवी, नदी, वायु, मेघ, वनस्पति आदि प्राकृतिक घटकों की देवी-देवताओं के रूप में स्तुति की गई है । वेद पर्यावरण संरक्षण हेतु जल, वायु, तथा, औषधियों के संरक्षण का निर्देश देते हैं-

**त्रीणि छन्दांसि कवयो वियेतिरे पुरुषं दर्शतं विश्व चक्षणम् ।**
**आपो वाता औषधयम् तान्येकस्मिन् भुवनं अर्पितानि ।।**[67]

वेदों में पर्जन्य (मेघ) की वर्षा करने वाले देवता के रूप में स्तुति की गई है ।[68] ऋग्वैदिक काल में प्रायः नदियों का जल ही व्यवहार में लाया जाता था । ऋग्वेद के नद्यः सूक्त में विश्वामित्र ऋषि ने विपाशा और शुतुद्री नदियों को

---

[66] स भूमि□सर्वतः स्पृत्वा......। - शुक्लयजुर्वेद, 10.90.1

[67] अथर्ववेद, 18.1.17

[68] यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति ।
यस्य व्रते ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ।। - ऋग्वेद, 5.83.5

सचेतन मानकर न केवल उनसे पार जाने के लिये उथली होने की प्रार्थना की अपितु उन्हें स्वसारः (बहने) कहकर उनके प्रति आत्मीयता भी प्रकट की- **ओ षु स्वसारः**[69] । शुद्ध जल के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है-

**इमाआपः प्र भराम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः ।**[70]

अर्थात् भली भांति रोगरहित तथा रोगनाशक इस जल को मैं लाता हूँ ।

अथर्ववेद के अनुसार भूमि चट्टान, पत्थर, और मिट्टी है- **शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता घृता**[71] । भूमि न केवल खनिज सम्पदाओं को धारण करती है अपितु अन्नादि वनस्पतिओं को उत्पन्न कर[72] प्राणियों को जीवन भी प्रदान करती है । अथर्ववेद में स्पष्टरूपेण पृथिवी को माता कहा गया है- **माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्याः**[73] तथा सदैव मातृभूमि की परिचर्या करते रहने की कामना की गई है ।[74] पृथिवी से प्रार्थना की गई है- हे पृथिवी ! तुम्हारी छोटी पहाड़ियाँ, हिम से आच्छादित ऊँचे पर्वत तथा तुम्हारे जंगल हम स्तोतृजनों के लिये के लिये कल्याणकारी होवे-

**गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु ।**[75]

अथर्ववेद अवि-तत्त्व (क्लोरोफिल) को वृक्ष-वनस्पतियों की हरियाली का कारण मानता है – **वृक्षा हरिता हरितस्त्रजः** ।[76] यजुर्वेद के सोलहवें रुद्राध्याय में वनस्पतियों को रूद्र या शिव का रूप माना गया है । वृक्ष-वनस्पतियों की संख्या अनन्त है अतः यजुर्वेद में रुद्रों की संख्या भी अनन्त कही गई है ।[77] वर्षा से प्राप्त जल को ओषधियाँ गर्भ रूप में धारण करती हैं- **रेतो दधात्योषधीषु गर्भम्** ।[78] वेदों में औषधियों से तात्पर्य केवल चिकित्सा सम्बन्धी जड़ी-बूटियों से ही नहीं है अपितु जो फल पकने पर समाप्त हो जाती हैं उन सभी को ओषधि कहा गया है- **ओषधयो फलपकान्ताः**।

जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों के कल्याण के लिए सूर्य का प्रकाश आवश्यक है । सूर्य की रश्मियाँ समस्त जगत को ऊर्जावान बनाती हैं । सूर्य के उदय होने पर स्थावर तथा जंगम प्राणियों की संसार में वृद्धि होती है । अतः ऋग्वेद में सूर्य को समस्त गतिशील और स्थावर संसार की आत्मा कहा गया-

**सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ।**[79]

---

[69] ऋग्वेद, 3.3.9
[70] अथर्ववेद, 3.12.9
[71] अथर्ववेद, 12.1.26
[72] मातरमोषधीनां...........।। - वही, 12.1.17
[73] वही, 12.1.12
[74] शिवा स्योनामनु चरेम विश्वहा..........।। - वही, 12.1.17
[75] वही, 12.1.9
[76] वही, 10.8.31
[77] असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।। - यजुर्वेद,16.54
[78] ऋग्वेद, 5.83.1
[79] ऋग्वेद, 1.115.1

सजीव जगत के लिए वायु अति महत्त्वपूर्ण है ।प्राणवायु के बिना सजीव जगत की कल्पना भी सम्भव नहीं है । ऋग्वेद में वायु के शुद्ध एवम् अशुद्ध दो भेद कहे गये हैं- **द्वाविमौ वातो वात** ।[80] वायु में कई गैसों के मिश्रण को स्वीकार करते हुए प्राणवायु को वायु के गृह में स्थापित माना है जो हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है-

**यददौ वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः ।**

**ततो नो देहि जीवसे ।।**[81]

वेदों में प्राकृतिक पर्यावरण के समान ही सांस्कृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण से सम्बन्धित सन्दर्भ भी प्राप्त होते हैं । यज्ञ वेदों का अविभाज्य अङ्ग है । हिंसा रहित यज्ञ की प्रशंसा की गई है- **अग्ने यं यज्ञमध्वरं** ।[82] यज्ञ मनुष्य के मन में शुभ संकल्पों का संचार कर उसकी एवम् उसके पर्यावरण की शुद्धि में सहायक सिद्ध होते हैं । मन मानव का सर्वस्व है । यह ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक एवं कर्मेन्द्रियों का प्रेरक है ।शुक्लयजुर्वेद के शिवसंकल्पसूक्त में छः मन्त्रों में ईश्वर से **मे मनः शिवसंकल्पमस्तु** अर्थात् मेरा मन कल्याणकारी संकल्पों वाला हो जाए, यह भावना व्यक्त की गई है । वेद समस्त वस्तुओं को ईश्वर को समर्पित कर उनके आसक्ति रहित भोग द्वारा मानव के आत्मिक उत्थान का सन्देश देते हैं-

**यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।**

**त्वेत्तत्सत्यमङ्गिरः ।।**[83]

अर्थात् हे अग्नि ! जो भी तुम हवि का दान करने वाले यजमान के लिए धन, गृह, प्रजा, पशु, आदि कल्याण करने वाले पदार्थ प्रदान करोगे, वे सब तुम्हारे ही हैं । हे अङ्गार रूपा अथवा अङ्गिरा मुनि को जन्म देने वाले अग्नि देवता ! यह सत्य है । इसमें कोई संशय नहीं है ।

वेदों में परस्पर वार्ता करते समय धीमे तथा मधुर स्वर में बोलने के लिए कहा गया है ।अथर्ववेद के अनुसार भाई-भाई से, बहन-बहन से अथवा परिवार में कोई भी एक दूसरे से द्वेष न करे । सब सदस्य एकमत और एकव्रती होकर आपस में शान्ति से भद्र पुरुषों के समान मधुरता से बातचीत करें-

**मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।**

**सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।**[84]

इस प्रकार वेद ध्वनि प्रदूषण एवम् उसके निदान के प्रति भी सजग हैं ।

[80] वही, 10.137.2

[81] वही, 10.186.3

[82] वही, 1.1.4

[83] ऋग्वेद, 1.1.6

[84] अथर्ववेद, 3.30.3

ऋग्वेद के अक्षसूक्त में द्यूतपट्ट पर फेंके जाते हुए पासों को देखकर उन्मत्त हो जाने वाले जुआरी का दुःख अभिव्यक्त किया गया है ।[85] अन्त में जुआरी को पासों से न खेलने, कृषि करने, कृषि से प्राप्त धन को ही पर्याप्त मानते हुए उसी में आनन्दित रहने तथा कृषि से ही गौ आदि भोग्य पदार्थ एवं दामपत्य सुख की प्राप्ति का सन्देश दिया गया है –

**अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व**

**वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।**

**तत्र गावः कितव तत्र जाया**

**तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः।।**[86]

वेदों में कृषि एवं गौ आदि पशुधन को विशेष महत्व दिया गया है । कृषि से प्राप्त अन्न विशेष रूप से पूजनीय है- **यश्चित्रो मानुषे जने** ।[87] उषा देवी से प्रार्थना की गई है कि हे उषा ! तुम गायों से युक्त और घोड़ो से युक्त प्रशंसनीय और उत्तम पराक्रम से युक्त अन्न हमें प्रदान करो –

**सास्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्य १ मुषो वाज सुवीर्यम् ।**[88]

इसी प्रकार सामवेद में मित्रावरुण से दूध वाली गौंओं के लिए प्रार्थना की गई है -

**आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ।**

**मध्वा रजाँ□सि सुक्रतू ।।**[89]

उपर्युक्त समस्त पर्यावरणीय सन्दर्भ वेदों की पर्यावरण के प्रति सजगता को प्रदर्शित करते हैं । निःसन्देह वेद हमारी अमूल्य धरोहर हैं । इसमे निहित ज्ञानराशि समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी है ।

वस्तुतः प्रकृति न केवल हमें जीवन प्रदान करती है अपितु हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न साधनों को भी उपलब्ध कराती है अतः वेद हमें प्राकृतिक सम्पदओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए इनके संरक्षण का महान संदेश देते हैं । साथ ही, वैदिक-कालीन पर्यावरण हमारे समक्ष एक ऐसे राष्ट्र की राह प्रशस्त करता है जिसका पर्यावरण पूर्णतः समृद्ध, उत्कृष्ट, कल्याणकारी एवं समस्त विश्व के लिए आदर्श स्वरूप हो[90] तथा जहाँ सभी ज्ञान के निर्मल प्रकाश से प्रकाशित रहें ।[91]

---

85 द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते मर्डितारम् ।।- ऋग्वेद,10.34.3

86 वही, 10.34.13

87 वही, 1.48.11

88 वही, 1.48.12

89 सामवेद, 2.11.7

90 योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।-शुक्लयजुर्वेद,22.22

91 जीवा ज्योतिरशीमहि ।।- ऋग्वेद, 7.32.26

- सन्दर्भ–ग्रन्थ-सूची –


- 1994, ऋग्वेद संहिता, नाग प्रकाशन, दिल्ली ।
- स्वामी दयानन्द (भाष्य०), 1976, यजुर्वेद, दयानन्द संस्थान, दिल्ली ।
- पं० रामस्वरूपशर्मा गौड (व्याख्या० एवं सम्पा०), 2008, सामवेद संहिता, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी ।
- स्वामी दयानन्द (भाष्य०), 1976, अथर्ववेद, दयानन्द संस्थान, दिल्ली ।
- डॉ० हरिदत्त शास्त्री (व्याख्या०); डॉ० कृष्णकुमार (व्याख्या० एवं सम्पा०), नवीन संस्करण, ऋक्सूक्त-संग्रहः, साहित्य भण्डार मेरठ ।
- डॉ० किरण टण्डन; डॉ० जया तिवारी (सम्पा०), 2003, वैदिक सूक्त चयनिका, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी, नैनीताल ।
- डॉ० धीरेन्द्र झा (लेखक), 2010, वेद पारिजात, कला प्रकाशन, बी० एच० यू०, वाराणसी ।
- डॉ० गंगा सहाय 'प्रेमी' ; डॉ० एच० एन० यादव (सम्पादक), वेद एवं वैदिक साहित्य, हरीश प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।
- डॉ० अनुपमा सक्सेना (सम्पा०), 2006-2007, जिज्ञासा (वार्षिक-पत्रिका), दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक महाविद्यालय, देहरादून, उत्तराखण्ड ।